छः ब्लॉक

जब रिश्ते कट जाते हैं, और सच ब्लॉक हो जाता है...

प्रमोद साहा

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Pramod Saha 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-69822-19-0

Cover design: Aafiya Saifi
Typesetting: Namrata Saini

First Edition: July 2026

अनुक्रमणिका

सिटी पार्क, शाहदरा, दिल्ली 1
संवेदना फाउंडेशन (महिलाओं की उम्मीद) (एन0 जी0 ओ0,
हेड ऑफिस, दिल्ली एनसीआर) 6
शाहदरा, पुलिस स्टेशन 8
संवेदना फाउंडेशन 9
सीटी पार्क (शाहदरा, दिल्ली) 10
'संवेदना फाउंडेशन' का ऑफिस 17
शाहदरा पुलिस स्टेशन 18
पटना-दानापुर रेलवे स्टेशन 19
दिशा का घर 21
(शाहदरा, पुलिस स्टेशन) 24
सीटी पार्क 25
संवेदना फाउंडेशन 28
शाहदरा, पुलिस स्टेशन (रात्रि का वक्त, करीब नौ बजे) 30
शाहदरा, विश्वास नगर 32
(होटल वेन्सन विल्ला का कमरा नं0- 302, शाम 05 बजे) 43
(होटल का रिसेप्शन काउंटर) 45
(होटल वेल्लारा, रिसेप्शन) 47

सिटी पार्क, शाहदरा, दिल्ली

(प्रवेश और शहबाज प्रत्येक सुबह की तरह आज भी जॉगिंग कर रहे हैं। देश की वर्तमान स्थिति को देखते हुए दोनों के बीच महँगाई राजनीति, आने वाले चुनाव इत्यादि विषयों पर चर्चा चल रही है।)

प्रवेश : भाई शहबाज दिन-प्रतिदिन महँगाई जिस रफ्तार से बढ़ रही है, ऐसे में हम मध्यम वर्गीय लोगों के लिए घर का खर्च चलाना, बच्चों को अच्छी शिक्षा देना, सब बहुत मुश्किल हो जाएगा।

शहबाज : हाँ भाई सही बोल रहे हो। एक-दो रूपया बढ़ाते-बढाते पेट्रोल-डीजल की कीमत इतनी बढ़ गई है, तो बाकि सभी चीजें तो महँगी होंगी ही।

प्रवेश : हाँ, वो तो है। देश की वर्तमान स्थिति को यदि सही करना है, तो हमारे युवक-युवतियों को राजनीति में सक्रिय होना होगा। सरकार से महँगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार इत्यादि विषयों पर निडर होकर सवाल करना होगा।

शहबाज : लेकिन ऐसा तो तब होगा न जब हमारे धूर्त राजनेता उन्हें पार्टियों की राजनिती से निकलने देगा। कोई 'स्वदेशीय जनता पार्टी' के मोह में फँसा है तो कोई 'स्वतंत्र कांग्रेस पार्टी' के मोह में।

प्रवेश : हाँ, अब युवाओं को किसी 'विशेष दल' का मोह त्याग देना चाहिए और यदि कोई कुशल और शिक्षित व्यक्ति चुनाव में उतरा हो, तो उन्हें एक बार सेवा करने का मौका देना चाहिए फिर वो निर्दलीय ही क्यों न चुनाव लड़ रहा हो।

शहबाज : हाँ सही बात है। मैंने नोटिस किया है, हमारे यंगस्टर अब 'सोशल मीडिया' पे राजनीति को लेकर बहुत 'सक्रिय' हुए हैं। बस, अब बहुत जल्द वे सोशल मीडिया के साथ-साथ ज़मीनी स्तर पर भी सक्रिय हो जाएं फिर देश को बदलने से कोई नहीं रोक पाएगा।

(प्रवेश और शहबाज दोनों थककर पार्क के कोने में लगे बेंच पर बैठते हैं। दो-चार लंबी साँसे लेने के बाद दोनों बेंच पर रखे उनके बोतलों को जैसे ही पानी पीने के लिए उठाते हैं। तभी वे देखते हैं कि एक जर्मन शेफर्ड (पालतु कुत्ता) बेंच के आगे से घुमकर उनके तरफ दौड़ते हुए आ रहे हैं।)

शहबाज : अरे भाई प्रवेश पैर ऊपर कर-पैर ऊपर करके कोने में सिमट कर बैठ जा। वरना नोंच खाएगा ये।

प्रवेश : हमने क्या बिगाड़ा है, इसका कहीं ये किसी राजनेता का तो नहीं है।

(लेकिन 'जर्मन शेफर्ड' बेंच को बगल से पार करते हुए बेंच के पीछे स्थित घनी झाड़ियों की तरफ लपकता है और जोर-जोर से भौंकना शुरू कर देता है।)

मिस्टर थॉमस (जर्मन शेफर्ड के मालिक) : 'हे जैक' कम हेयर। क्यों उधर जाकर इतना भौंक रहे हो ? चलो यहाँ आओ मेरे पास।

(जैक इधर-उधर हलचल करते हुए और भी जोर-जोर से भौंकना शुरू कर देता है। इतने में प्रवेश और शहबाज भी मिस्टर थॉमस के पास पहुँचते हैं।)

प्रवेश : क्या हुआ भाई साहब, यह क्यों इतना भौंक रहा है।

मिस्टर थॉमस : पता नहीं पहली बार ऐसा कर रहा है। प्रत्येक दिन आता हूँ मैं इसे अपने साथ लेकर, आज तक ऐसा नहीं किया था। ऐसा लग रहा है कुछ है वहाँ शायद... जिसे देखकर यह इतना भौंक रहा है।

शहबाज : चलिए देखते हैं चलकर। चलो प्रवेश आओ।

तीनों झाड़ी की तरफ जाते हैं, तो वे एकदम चौंक जाते हैं। झाड़ी के पास एक बड़ा सा बैग था जिसके दोनों ओर से हाथों की ऊँगलियाँ दिखाई पड़ रही थीं।

प्रवेश चौंकते हुए कहते हैं- तभी ये इतना हलचल करते हुए भौंक रहा था। वहाँ पार्क में मौजूद और भी लोग इकट्ठे हो जाते हैं।

मिस्टर थॉमस : मैं तो आज मोबाइल लेकर नहीं आया हूँ, तो आप दोनों में से कोई पुलिस को सूचना दे दीजिए न।

प्रवेश अपने ट्राउजर से फोन निकालकर 112 डायल करके सारी बातें बताते हैं।

पार्क में उपस्थित सभी लोग घबराए हुए हैं और आपस में तरह-तरह की बातें कर रहे हैं।

सायरन बजाते हुए पुलिस की दो गाड़ी पार्क के बाहर खड़ी होती है। 15-16 पुलिस वाले पार्क के अंदर झाड़ी के पास पहुँचते हैं। जैक अभी भी लगातार भौंक रहा था। मिस्टर थॉमस के समझाने पर थोड़ा शांत होता, फिर भौंकना शुरू कर देता।

यादव सर अपने अंदाज में पूछते हैं- फोन किसने किया था ?

प्रवेश : सर, मैंने किया था।

यादव सर : सबसे पहले आपने देखा बैग ?

प्रवेश : नहीं सर, सर्वप्रथम इन्होंने देखा था (मिस्टर थॉमस की ओर इशारा करते हुए।)

यादव सर : हाँ जी, कैसे देखा आपने।

मिस्टर थॉमस : सर प्रत्येक दिन की तरह मैं और जैक (अपने पालतु कुत्ते को दिखाते हुए) पार्क में टहल रहा था कि अचानक जैक खुद को मेरे हाथों से छुड़ाकर झाड़ी के पास पहुँचा और वहाँ जाकर भौंकने लगा। मेरे बहुत बुलाने पर भी जब वह नहीं आया तो मैं उसे लाने झाड़ी के तरफ बढ़ा, तभी मेरी नजर बैग पर पड़ी। तब तक ये दोनों भाई साहब भी मेरे पास पहुँच गए थे।

यादव सर : आप लोगों ने सीधे बैग नहीं देखा न, मतलब पहले आपके डॉग ने देखा फिर उसके लगातार भौंकने के बाद आप लोगों ने देखा।

(मिस्टर थॉमस प्रवेश और शहबाज तीनों एक साथ अपने सिर हिलाते हुए घबराहट भरी आवाज के साथ कहते है- जी सर ऐसा ही हुआ था।)

यादव सर अपने सिपाहियों को बैग लाकर खोलने का आदेश देते हैं। चार-पाँच सिपाही तुरंत नीचे झाड़ी के पास जाकर बैग को ऊपर लेकर आते हैं।

यादव सर : खान साहब हाथों में ग्लव्स लगाकर बैग के चैन को खोलिए।

खान साहब (कांस्टेबल जमशेद खान) : जी सर! कहते हुए खान साहब द्वारा जैसे ही बैग के चैन को खोला जाता है वहाँ मौजूद सभी लोग बैग के अंदर रखे दो शवों (डेड बॉडी) को देखकर घबरा जाते हैं।

(दो में से एक शव 24-25 साल की लड़की का था तो वहीं दूसरा किसी 25-30 साल के लड़के का था।)

खान साहब : यादव सर 'ऑनर किलिंग' का मामला लग रहा है। शायद दोनों 'लवर' होंगे परिवार वाले के खिलाफ गये होंगे। इसलिए दोनों में से किसी एक के परिवार द्वारा उन्हें मार दिया गया है।

यादव सर : हो सकता है खान साहब लेकिन सच्चाई तो पता करनी होगी। इतना कहकर यादव सर फॉरेंसिक वाले को सूचना देते हैं और क्राइम सीन को बैरिकेड टेप से घेरने का आदेश देते हैं।

पार्क से लोग घबराहट के साथ घर के लिए निकलना शुरू कर देते हैं। सब अपने-अपने परिवार के सदस्यों की चिंता में जल्द से जल्द घर पहुँचना चाह रहे हैं।

यादव सर द्वारा मिस्टर थॉमस, शहबाज और प्रवेश का पता और मोबाइल नम्बर लेकर उन्हें भी घर जाने का आदेश दे दिया जाता है।

फॉरेंसिक टीम और एम्बुलेंस भी पार्क के अंदर पहुँच चुका है। फॉरेंसिक टीम द्वारा 'क्राइम सीन' को बारिकी से जाँच करने के बाद भी कोई सुराग हाथ नहीं आता है।

सी0 एस0 आइ0 जसीम सर : यादव सर बहुत ज्यादा तैयारी के साथ मर्डर किया गया है। एकदम प्रोफेशनल मर्डर। पोस्टमार्टम और सी0 सी0 टी0 वी0 देखने के बाद शायद कुछ सुराग मिल जाए।

शहर के सबसे प्रमुख पार्क में 'डबल मर्डर' हुआ हो और मीडिया न पहुँचे। थोड़ी देर ही सही लेकिन 'मीडिया ग्रुप' भी पार्क के अंदर पहुँच चुके हैं और यादव सर मीडिया वालों को बिल्कुल भी पसंद नहीं करते हैं। दोनों के बीच छत्तीस का आँकड़ा है।

मीडिया ग्रुप : सर शहर के सबसे प्रमुख पार्क में ऐसे दो 'डेड बॉडी' का एक साथ मिलना क्या पुलिस के कार्यशैली पर एक दाग नहीं है।

यादव सर : हमने फॉरेंसिक टीम के साथ मिलकर जाँच शुरू कर दिया है कातिल बहुत जल्द हमारे गिरफ्त में होगा। इतना कहकर यादव सर दोनों शवों को एम्बुलेंस में रखवाकर 'पोस्टमार्टम' के लिए पूरी टीम के साथ पार्क से निकल पड़ते हैं।

मीडिया ग्रुप : सर (गाड़ी रोकने की कोशिश करते हुए) क्या क्राइम सीन से कुछ भी सुराग मिला है ?

खान साहब : कृपया रास्ता छोड़ें आप लोग... सर ने कहा न कातिल जल्द से जल्द पकड़ा जाएगा।

मीडिया ग्रुप : पार्क में हुए 'डबल मर्डर' के मिस्ट्री को जानने के लिए हमारे चैनल से जुड़े रहें। पुलिस द्वारा जो भी अपडेट मिलेगी उसे आप तक सबसे पहले हमारे द्वारा पहुँचाया जाएगा।

संवेदना फाउंडेशन (महिलाओं की उम्मीद) (एन0 जी0 ओ0, हेड ऑफिस, दिल्ली एनसीआर)

संवेदना फाउंडेशन में संस्थापक 'मिस प्रीति' को मिलाकर कुल छः सदस्य हैं। सभी सदस्य अपने-अपने सीट पर बैठे हुए हैं। मिस प्रीति विभिन्न मामलों को लेकर सभी को संबोधित कर रही हैं।

मिस प्रीति : जैसा कि हमें पता है दिन-प्रतिदिन भारत में महिलाओं के साथ घरेलु हिंसा, दहेज के लिए प्रताड़ित करना, बलात्कार हत्या इत्यादि की घटना लगातार बढ़ रही है। समय रहते मतलब सही समय में थोड़ा 'एक्टिव' रहते हुए हमारे पास जितने भी केस (मामले) हैं, सभी का जल्द निपटारा करना होगा।

संदीप : मैम इस महीने तो और भी ज्यादा केस आ गया है।

मिस प्रीति : हाँ, कुछ ज्यादा ही है इसीलिए तो कह रही हूँ हमें दो ग्रुप में काम करना होगा।

सुनिधी : जी मैम, यदि लोगों को हमारे संस्था पे संदेह हो गया तो हमारे लिए भी मुश्किल हो जाएगी।

मिस प्रीति : ऐसा कुछ नहीं होने वाला है। 'मैं हूँ न' आप चिंता न करें, हम सब मिलकर संभाल लेंगे।

(अचानक ऑफिस के गेट को खटखटाने की आवाज तथा 'घंटी' बजने की आवाज अंदर सुनाई पड़ती है।)

मिस प्रीति : जोया देखो कौन है।

जोया : जी मैम। जोया दरवाजा खोलती है तो बाहर एक घबराई हुई महिला रो रही होती है। जोया उस महिला को सांत्वना देते हुए अंदर ले जाकर बैठाती है।

मिस प्रीति : आप पहले पानी पी लीजिए, फिर आराम से हमें अपनी परेशानी बताइए। अब घबराने की बिल्कुल भी जरूरत नहीं है।

महिला : मैम मेरा नाम दिशा है। मैं पटना के फतहपुर गाँव की रहने वाली हूँ। मेरी शादी तीन साल पहले हुई थी। शुरूआत में सब कुछ सही चल रहा था लेकिन दो बेटी होने के कारण मेरे साथ ससुराल में मेरे सास-ससुर द्वारा भेद-भाव शुरू हो गया। मुझे माइके से पैसा लाने को कहा जाता है। पैसा न ला पाने की स्थिति में मुझे लगातार मारा-पीटा जाता है। अब तो मेरे जान पे भी खतरा मंडराने लगा है।

मिस प्रीति : और तुम्हारे पति कुछ नहीं बोलते हैं।

दिशा : वो बाहर रहते हैं। पहले वो मेरी बात मानते थे लेकिन अब वे भी अपने माँ-पिताजी की ही सुनते हैं। मैम! मैं बहुत मुश्किल से अपनी माँ से मिलने का बहाना बनाकर आपसे मदद माँगने आई हूँ।

मिस प्रीति : आप निश्चित रहिए सब ठीक हो जायेगा; हम हैं। एक काम कीजिए आप अपने माईके चले जाइए, फिर कल किसी को घर से साथ लेकर ससुराल पहुँचिए। हमारी टीम कल शाम तक पटना पहुँच जाएगी आपके घर। आप अपना पता और नंबर लिखवा दीजिए।

महिला अपना पता और मोबाइल नंबर लिखवाकर सभी को धन्यवाद करते हुए एन0 जी0 ओ0 से अपने घर के लिए निकल जाती है।

मिस प्रीति : सयान और तनुश्री आप दोनों रात्री के किसी भी ट्रेन से पटना के लिए निकलिए। हो जाएगा न आप दोनों से।

सयान और तनुश्री : बिल्कुल हो जाएगा मैम। रात 9 बजे है एक ट्रेन... उससे ही चले जाते हैं हम दोनों।

प्रीति मैम : जोया आप अपने कार से सयान और तनुश्री को रूम पर छोड़ दीजिए ताकि ट्रेन मिस न हो इनका। हम लोग भी कुछ देर में चले जाएँगे।

शाहदरा, पुलिस स्टेशन

हेड कांस्टेबल जमशेद जी (खान साहब) : सर, अंदर आ सकता हूँ।

यादव सर : आइए-आइए खान साहब।

खान साहब : जय हिन्द सर।

यादव सर : जय हिन्द खान साहब, बैठ जाइए, बैठ जाइए।

खान साहब : सर जसीम सर ने कॉल किया था। उन्होंने आपको जल्द से जल्द सीटी पार्क में क्राइम सीन के पास पहुँचने को कहा है। पोस्टमार्टम का रिपोर्ट मिल गया है, उन्हें उसी से संबंधित बात करनी है आपसे।

यादव सर : गाड़ी निकलवाइए खान जी और सिंह सर को भी सूचना दीजिए कि वे भी पहुँचे।

(खान साहब सिंह सर को कॉल करके यादव सर की सूचना देते हैं और उन्हें जल्द से जल्द सीटी पार्क पहुँचने को कहते हैं। खान जी गाड़ी निकालते हुए समय देखते हैं, शाम के 4 से ज्यादा हो चुके हैं।)

यादव सर : चलिए खान साहब चलिए जल्दी। जसीम सर ने जल्दी में बुलाया है, मतलब कुछ तो सुराग मिला है कातिल तक पहुँचने का।

जसीम सर अपनी टीम के साथ तेजी से गाड़ी चलाते हुए सीटी पार्क के लिए चल पड़े हैं, उधर यादव सर और सिंह सर भी पार्क के लिए निकल चुके हैं।

संवेदना फाउंडेशन

मिस प्रीति : सयान और तनुश्री तो पटना के लिए निकले है। इधर जो भी नए मामले आते हैं, आप लोगों को ही सुलझाना होगा, क्योंकि मुझे कुछ पहले के मामलों को आज देखना है।

सभी सदस्य : हाँ, मैम हम सभी अपने बचे हुए मामलों को जल्द से जल्द निपटा लेंगे।

मिस प्रीति : हाँ, लेकिन ध्यान से, बहुत सावधानी से सभी मामलों को निपटाना है। आप सभी को मंत्री दिग्वेश सिन्हा और इरफान शेख के बेटों का मामला तो याद ही होगा।

संदीप : हाँ मैम बिल्कुल याद है, किस तरह दोनों ने मिलकर अपनी पॉवर और पहुँच के बदौलत अपने अपराधी बेटों को बचाया था और हमारे संस्था के साथ-साथ हम सभी को बर्बाद करने का धमकी भी दिया था।

जोया : मैम! हम लोगों ने जो कार्य करने का दायित्व उठाया है तो ऐसी धमकियाँ तो मिलती रहेगी। ऐसा भी हो सकता है कि लोगों की भलाई करते हुए हमारी जान भी चली जाए।

सुनीधि : चाहे कुछ भी हो जाए लेकिन हम पीछे भी तो नहीं हट सकते हैं।

मिस प्रीति : हाँ जान का खतरा तो है। लेकिन बेबसी में फँसी महिलाओं की जान भी तो हमें बचाना है। उस दिन भी यदि वह लड़की हमारे संस्था में नहीं पहुँचती तो शायद दोनों मंत्रियों के दोनों नालायक बेटे उस लड़की की हत्या कर देते।

सीटी पार्क (शाहदरा, दिल्ली)

जसीम सर फॉरेंसिक टीम के साथ सीटी पार्क पहुँचते हैं। डबल मर्डर के बाद से पार्क में बहुत कम संख्या में लोग शाम के वक्त टहलने आते हैं। जसीम सर की नजर पार्क के गेट से आते हुए एक व्यक्ति पर पड़ती है जो अपने डॉग के साथ आ रहे हैं। कुछ सामने आने पर जसीम सर मिस्टर थॉमस और उनका पालतु डॉग जैक को पहचान लेते हैं।

जसीम सर : हैलो मिस्टर थॉमस कैसे हैं आप! हैलो जैक। जैक थोड़ा भौंकता है पर मिस्टर थॉमस ने जैक को कसकर पकड़ रखा है।

मिस्टर थॉमस : हाँ सर मैं ठीक हूँ, आप कैसे हैं? और मर्डर से संबंधित कातिलों का कुछ सुराग मिला क्या ?

जसीम सर : हाँ ठीक हूँ मैं भी। मर्डर संबंधित जाँच के लिए ही आया हूँ। यादव सर भी अपनी टीम के साथ पहुँच रहे हैं।

मिस्टर थॉमस : ओह, यादव सर भी आ रहे हैं फिर तो मैं जॉगिंग कर लेता हूँ पता नहीं फिर सवालों का सिलसिला शुरू हो गया तो जॉगिंग नहीं हो पायेगा।

(जैक भी थोड़ा भौंकता है।)

जसीम सर (मुस्कुराते हुए) : हाँ-हाँ आप जॉगिंग कर लीजिए।

यादव सर की गाड़ी भी सायरन बजाते हुए पार्क के अंदर पहुँचती है। यादव सर और खान साहब बाकी सिपाहियों के साथ जसीम सर के पास पहुँचते हैं। सिंह सर भी पहले से क्राइम सीन के पास पहुँचकर सुराग की तलाश में हैं।

जसीम सर : जय हिन्द सर।

यादव सर : जय हिन्द, जसीम जी बताइए क्या है अपडेट ? कुछ सुराग मिला है क्या ?

जसीम सर : सर 'पोस्टमार्टम रिपोर्ट' थोड़ा हैरत करने वाला है। जिस सुबह दोनों शव पार्क में मिला था, उससे ठीक पिछले रात उन दोनों को मार दिया गया था।

यादव सर : मतलब दोनों को मारा कहीं और गया, यहाँ लाकर सिर्फ फेंका गया है।

जसीम सर : जी हाँ ! और हाँ उन दोनों को जूस या किसी 'पेय पदार्थ' के साथ जहर दिया गया है। दोनों की मृत्यु के बाद जाँच (इन्वेस्टिगेशन) को भटकाने के मकसद से उन पर हथियार से हमला किया गया है।

यादव सर : कातिल शातिर है और कत्ल करने के तरीकों का जानकार भी।

जसीम सर : हाँ सर शातिर तो है तभी तो शवों को एकदम वहाँ लाकर फेंका जिस जगह उसे बचाव दिखा। लेकिन सर कातिल जितना भी शातिर हो कुछ न कुछ गलती तो करता है, छोटा से छोटा ही सही सुराग तो छोड़ता ही है।

यादव सर : हाँ उस सुराग का ही तलाश मुझे भी है।

सिंह सर सिपाहियों के साथ मिलकर 'क्राइम सीन' को अच्छे से जाँच करने की कोशिश कर रहे हैं ताकि कोई सुराग हाथ लग जाए।

मिस्टर थॉमस घर जाने से पहले सोचते हैं कि यादव सर से बात कर लें। ज्यादा शाम हो जाने के कारण पार्क में मिस्टर थॉमस के अलावा सिर्फ एक 'प्रेमी जोड़ा' प्यार भरे पलों में प्यार भरी बातें कर रहे हैं। लेकिन वह प्रेमी जोड़ा भी मौका देखकर जाने वाला होता है कि तभी सिंह सर की नजर उन पे पड़ जाती है।

सिंह सर उस प्रेमी जोड़े को रूकने को कहते हैं। दोनों डरे-सहमे रुक जाते हैं।

सिंह सर : तुम्हें पता नहीं है सिर्फ दो दिन हुए हैं पार्क में दो 'डेड बॉडी' मिली थी।

दोनों लवर्स आवाज लड़खड़ाते हुए कहते है- जी सर पता तो है।

सिंह सर : जब पता है तो फिर किसी सुरक्षित जगह मिलना चाहिए न। इससे पहले जो दो 'बॉडी' मिली थी वह भी एक कपल की ही थी।

दोनों लवर्स : जी सर गलती हो गई। अब यहाँ नहीं आएँगे सर।

सिंह जी : हाँ जब तक कातिल पकड़ा न जाए तब तक यहाँ नहीं मिलना है। हो सकता है कातिल का अगला निशाना आप दोनों हो जाओ। ठीक है अपना नाम और नंबर दे दीजिए और पासवान जी का नंबर आप ले लीजिए। यदि कभी ऐसा होता है, तो पासवान जी को कॉल कर लीजिएगा। उनको कॉल किया आपने मतलब कि आपने मेरे से बात कर ली।

दोनों अपना नाम और नंबर पासवान जी को देते हैं और उनका नंबर लेकर पार्क से चले जाते हैं।

मिस्टर थॉमस : 'गुड इवनिंग' सर।

यादव सर : 'गुड इवनिंग' मिस्टर थॉमस। इसे अब जंजीर से बाँधना शुरू कर दिया है आपने।

मिस्टर थॉमस : सर अब मैं नहीं चाहता हूँ कि इसके कारण फिर आपके सवालों की बारिश मेरे पे बरसे।

जसीम सर बीच में टोकते हुए कहते हैं, लेकिन मिस्टर थॉमस अभी हम 5-10 मिनट के लिए जैक को आपसे लेने वाले हैं क्राइम सीन को इन्वेस्टिगेट करने के लिए।

मिस्टर थॉमस मुस्कुराते हुए (शायद बनावटी मुस्कुराहट) कहते हैं, जी सर बिल्कुल जैक एक 'ट्रेन्ड डॉग' है। आपको सुविधा होगी क्योंकि इसका 'आल फैक्टरी सेन्स' भी बहुत अच्छा है।

जसीम सर जैक को लेकर आगे बढ़ते हैं। क्राइम सीन को सूंघता हुआ जैक तेजी से दौड़ना शुरू कर दिया है। बाकी सिपाही भी यादव सर और सिंह सर को फॉलो करते हुए खोज-बीन कर रहे हैं। जैक अब थोड़ा तेजी से दौड़ना शुरू कर दिया है, जसीम सर जैक को हाथ में कसकर पकड़े हुए हैं। अचानक जैक थोड़ा ज्यादा भौंकना शुरू कर देता है और दूसरे घने झाड़ी के तरफ जसीम सर को खींचने लगता है। जैक खींचता हुआ जसीम

सर को जहाँ दूसरे झाड़ी के पास ले जाता है, वहाँ फिर से एक बड़ा सा बैग था। जसीम सर थोड़ा आगे बढ़ते हैं बैग को देखने के लिए तो उन्हें पिछली बार की तरह बैग के दोनों कोनों से हाथ की उंगलियाँ दिखाई पड़ती हैं।

जसीम सर तुरंत यादव सर, सिंह सर को आवाज देता है कि सर जल्दी आइए यहाँ फिर से एक बैग रखा है जिसके दोनों ओर हाथों की उँगलियाँ बाहर निकली हुई हैं।

इतना सुनते ही सभी जसीम सर के पास पहुँचते हैं। जैक भी लगातार जोर-जोर से भौंक रहा है और खुद को छुड़ाकर बैग में क्या है, शायद पता लगाना चाह रहा है।

अब सभी जसीम सर के साथ बैग से थोड़ी दूरी पर बैग को निहारते हुए खड़े हो गए हैं। मिस्टर थॉमस भी एकदम हैरानी में हैं, वे यह सोच रहे हैं कि काश मैं भी घर चला गया होता।

यादव सर : पाठक जी आप और खान साहब इन लोगों (कुछ सिपाहियों) के साथ जाइए और बैग ऊपर ले आइए।

सिंह सर : यादव सर एक मर्डर मिस्ट्री का पता भी नहीं चल पाया और यहाँ 'डेड बॉडी' से भरा एक और बैग।

यादव सर : हाँ, सिंह सर इस बार या तो नौकरी छोड़नी होगी या तो नींद-चैन सब त्यागकर कातिल को पकड़ना होगा।

सिंह सर : पूरी दिल्ली में दहशत का माहौल हो जाने वाला है सर।

यादव सर : हाँ, सिंह सर पूरी दिल्ली में कातिलों ने दहशत तो फैला दिया है लेकिन अब हम भी उन्हें बतलाते हैं 'दिल्ली पुलिस' की दहशत कैसी है।

(बैग को ऊपर लाकर खोला जाता है फिर से बैग में दो डेड बॉडी देखकर सभी हैरान हो जाते हैं। इस बार एक यंग लड़की के साथ एक 50-55 वर्ष के पुरूष का डेड बॉडी है।)

मिस्टर थॉमस को आज पार्क जॉगिंग के लिए आना भारी पड़ गया था। वे गंभीर होकर कुछ ऐसा ही सोच रहे थे शायद।

मिस्टर थॉमस : यादव सर समय काफी ज्यादा हो चुका है, यदि आपकी इजाजत हो तो मैं घर जाऊँ। बेकरी जाकर आज का सारा लेन-देन देखना है, फिर घर जाकर खाना भी बनाना है।

जसीम सर : मिस्टर थॉमस जब आपने इतना कॉपरेट किया तो कुछ देर और कर दीजिए। बस जैक के साथ एक बार और मुझे क्राइम सीन इन्वेस्टिगेट करने दीजिए।

मिस्टर थॉमस : हाँ, जरूर सर। जैक जाओ सर की मदद करो इन्वेस्टिगेशन करने में।

जैक दो-चार बार थोड़ा अलग अंदाज में भौंकता है शायद अपने मालिक के बातों का जवाब दे रहा हो। जैक आगे-आगे और जसीम सर एक हाथ में लाइट और दूसरे हाथ में जैक को कसकर पकड़े हुए तेजी से जैक के साथ दौड़ रहे हैं। कुछ सिपाही भी मोबाईल का 'फ्लैश लाईट' जलाकर जसीम सर के पीछे हैं।

सिंह सर : यादव सर इस बार दो डेड-बॉडी में से एक यंग लड़की की है, तो वही दूसरा एक 50-55 वर्ष के व्यक्ति का। इससे पहले दोनों बॉडी यंग कपल का था। क्या कातिल हमें कनफ्यूज करना चाह रहा है या हमें चुनौती दे रहा है।

यादव सर : हाँ, सिह बाबु, मैं भी यही सब सोच रहा हूँ लेकिन जो भी हो अब वह कातिल ज्यादा लंबे समय तक बचने वाला नहीं है।

(जसीम सर को करीब 15-20 मिनट खोजबीन करने के बाद जैक की मदद से एक काँच का छोटा बोतल मिलता है। शायद कातिल तक पहुँचने का एक छोटा सा सुराग।)

जसीम सर : यादव सर ये बोतल मिला है, ऐसा बोलते हुए जसीम सर बोतल के ढक्कन को खोलते हैं। ढक्कन खोलते ही उस खाली बोतल से एक दम घोटने जैसा गंध निकलता है। जसीम सर तुरंत बोतल को बंद कर देते हैं।

यादव सर : क्या हुआ जसीम सर ?

जसीम सर : सर शायद इस बोतल में कोई जहर कातिल द्वारा लाया गया हो और दोनों को यहीं मारा गया हो जहर देकर।

यादव सर : बोतल पे कोई स्टीकर नहीं था या बोतल के आस-पास।

जसीम सर : नहीं सर कातिल भी बहुत चालाकी से खेल रहा है। लेकिन यह बोतल हमें कातिलों तक पहुँचने में मदद जरूर करने वाला है सर।

मिस्टर थॉमस : सर अब मुझे जाने का इजाजत दीजिए।

जसीम सर : हाँ मिस्टर थॉमस जैक को संभालिए और आप जाइए आपको बेकरी जाकर लेन-देन भी देखना है। ओवरऑल हेल्प करने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद आपका।

मिस्टर थॉमस : ओके सर, चलता हूँ फिर मैं। कोई भी ऐसा सहायता जो मैं कर सकता हूँ तो बोलियेगा जरूर सर। जैक को साथ लेकर मिस्टर थॉमस चले जाते हैं।

सिंह सर : सरकारी अस्पताल कॉल करके एम्बुलेंस क्राइम सीन (पार्क में) के पास भेजने को कहते हैं।

एम्बुलेंस से पहले मीडिया वाले पार्क में क्राइम सीन के पास पहुँच जाते हैं।

यादव सर- जसीम सर और सिंह सर को कहते हैं आप दोनों संभालिए मीडिया वालो को, मैं क्राइम सीन का घेराबंदी करवाता हूँ। कुछ देर में एम्बुलेंस भी पहुँच जाएगी।

मीडिया : सर! दो दिन पहले दो डेड-बॉडी का मिलना और आज फिर दो बॉडी का मिलना। आखिर कब पकड़े जाएँगे कातिल।

सिंह सर : आज कुछ सबूत हमारे हाथ लगे हैं, अब ज्यादा समय तक कातिल बचने वाला नहीं है।

मीडिया : सर, आपने इससे पहले भी कहा था कि कातिल जल्द आपके गिरफ्त में होंगे लेकिन यहाँ तो कातिल दो लोगों को मारकर आपको ललकार रहा है।

जसीम सर : देखिए आप मीडिया बंधु हमारा साथ दिजिए न कि हमारे पीछे पर जाइए। कातिल अब ज्यादा समय तक बचने वाला नहीं है।

(सायरन बजाता हुआ एम्बुलेंस पार्क में प्रवेश करता है। यादव सर खान साहब से शवों को एम्बुलेंस में रखवाकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवाने का आदेश देते हैं।)

जसीम सर : यादव सर यदि हमने यह पता लगा लिया न यह बोतल कहाँ का है और इसके अंदर कौन सा केमिकल था तो फिर एक बड़ा सुराग हमारे हाथ लग जायेगा कातिलों को हवालात पहुँचाने के लिए।

यादव सर : हाँ, ये तो पता करना ही होगा कि इस तरह के केमिकल कहाँ बिकते हैं।

सिंह सर : और सर अगला बैग पार्क में मिले उससे पहले कातिलो को पकड़ना ही होगा। दिल्ली पुलिस की बहुत बदनामी हो गई है।

जसीम सर : अब हमें भी कबूतरों को फँसाने के लिए जाल बिछाना होगा सर।

(एम्बुलेंस में दोनों डेड-बॉडी को रखकर पोस्टमार्टम के लिए पार्क से अस्पताल भिजवाया जा रहा है।)

मीडिया के सवालों को नजर-अंदाज करते हुए पार्क के मेन गेट पे ताला लगाकर सभी पुलिस वाले भी निकल पड़ते हैं।

‘संवेदना फाउंडेशन’ का ऑफिस

मिस प्रीति, जोया, संदीप और सुनिधी अपनी-अपनी सीटों पे बैठे हुए हैं।

मिस प्रीति : जोया! आप सयान या तनुश्री किसी को कॉल लगाइए और जरा पूछिए कि कहाँ पहुँचे वे लोग। और हाँ सुनिधी आप जरा बलवीर नगर जाकर, कल जो महिला कॉल की थी, उससे मिलकर आइए।

सुनिधी : ओके मैम।

मिस प्रीति : उसने अपना पता और नंबर आपको ही नोट करवाया था न।

सुनिधी : हाँ, मैम उनकी डिटैल है मेरे पास।

मिस प्रीति : ठीक है संदीप को अपने साथ लेकर चले जाइए आप।

जोया : हैलो ! तनुश्री कैसी हो ? कहाँ पहुँचे तुम लोग।

तनुश्री : मैं ठीक हूँ। अभी हम लोग बक्सर पहुँचे हैं ट्रेन स्टेशन पर रूकी हुई है। यहाँ से हमें सिर्फ 2 घंटा के करीब लगेगा पटना पहुँचने में।

जोया : ठीक है, फतेहपुर पहुँचकर फोन करना ध्यान से।

तनुश्री : हाँ जरूर, मैं जैसे ही पटना-दानापुर पहुँचुंगी तुरंत वहीं से पहले तुम्हें और मैम को बताऊँगी, फिर फतेहपुर जाऊँगी। ओके बाय।

जोया : प्रीति मैम! वे लोग बक्सर पहुँच चुके हैं। शाम सात बजे के करीब वे पटना पहुँचेंगे।

प्रीति मैम : ओ ठीक है। चले जोया, आज बहुत दिनों के बाद पानी-पूरी खाने का मन कर रहा है। आते हैं खाकर।

शाहदरा पुलिस स्टेशन

यादव सर खान साहब को पार्क में मिले छोटे बोतल देकर केमिकल शॉप में जाकर बोतल और केमिकल से संबंधित जानकारी इकट्ठा करने को कहते हैं।

खान साहब अपने साथ पासवान जी को लेकर चल पड़ते हैं जानकारी इकट्ठा करने।

जसीम सर यादव सर को फोन पे पोस्टमार्टम से संबंधित जानकारी देते हैं।

जसीम सर : हैलो, जय हिन्द सर।

यादव सर : जय हिन्द जसीम जी। और बताइए केस से संबंधित कोई जानकारी।

जसीम सर : जी हाँ सर। पोस्टमार्टम रिपोर्ट मिला मुझे इस बार भी कातिलों ने पोइजन देकर ही मारा है दोनों को।

यादव सर : वो तो मुझे दोनों बॉडी को देखकर ही लगा था ऐसा। बस गुमराह करने के लिए हथियार से हमला किया गया था शरीर पर।

जसीम सर : ठीक है सर। मैं एक बार फिर जाकर क्राइम सीन को इन्वेस्टिगेट करके आता हूँ।

यादव सर : हाँ, ठीक है जसीम सर। यदि किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो तो बताइएगा।

जसीम सर : श्योर सर!

पटना-दानापुर रेलवे स्टेशन

सयान और तनुश्री पटना-दानापुर रेलवे स्टेशन में उतरते ही सबसे पहले प्रीति मैम को कॉल करती हैं।

तनुश्री : हैलो, प्रीति मैम। मैं और सयान पटना पहुँच चुके हैं। अब यहाँ से ऑटो से फतेहपुर के लिए निकलना है।

प्रीति मैम : हाँ आप दोनों जाइए दिशा के घर जाकर वहाँ की स्थिति को समझकर उनके विवाद को सुलझाइए। यदि कुछ भी समस्या हुई तो मुझे कॉल कर लीजिएगा।

सयान और तनुश्री ऑटो वालों से फतेहपुर चलने को कह रहे हैं। लेकिन अभी तक कोई भी ऑटो वाले फतेहपुर जाने को तैयार नहीं हुए हैं।

सयान : ओ भैया (ऑटो वाले से) फतेहपुर चलना है क्या ?

ऑटो वाले भैया : जी हाँ, बिल्कुल चलना है आप ये बताइए फतेहपुर में कहाँ जाना है आपको।

सयान दिशा द्वारा बताया गया पता ऑटो वाले भैया से बतलाते हैं।

ऑटो वाले भैया : अच्छा भैया जी... आपको हम एकदम उस कॉलोनी में ही उतार देंगे लेकिन भाड़ा लग जाएगा पूरा चार सौ।

सयान : ठीक है हम आपको भाड़ा पूरा चार सौ भी देंगे और पचास रूपया अलग से चाय-नाश्ता के लिए। बस आप गाड़ी आराम से चलाना।

ऑटो वाले भैया गाड़ी स्टार्ट करते हैं। सयान और तनुश्री ऑटो में बैठकर ऑटो वाले भैया से बात करते हुए फतेहपुर के लिए निकल पड़ते हैं।

(उधर खान साहब और पासवान जी एक-एक करके शाहदरा के सभी केमिकल दुकान में बोतल दिखाकर कुछ जानकारी इकट्ठा करने की कोशिश कर रहे हैं।)

ऑटो वाले भैया : चलो भैया अब उतर जाओ आपका मंजिल आ गया है, यहाँ से आगे जाकर बाईं ओर वाली गली रेलवे कॉलोनी है। वहाँ जाकर आप किसी से पूछ लीजिए पता आपको जानकारी मिल जाएगा।

सयान : ये लीजिए भैया चार सौ रूपया आपका भाड़ा और ये सौ रूपया अलग से सफर को मजेदार बनाने के लिए।

तनुश्री और सयान ऑटो से उतरकर दिशा को फोन लगाकर बताते हैं कि वे फतेहपुर रेलवे कॉलोनी वाली दूसरी गली में आ चुके हैं। दिशा उन्हें घर का पता समझाती है।

तनुश्री : हैलो सर (गली में एक आदमी से) क्या आप महेन्द्र श्रीवास्तव जी के घर का पता बता सकते हैं ?

वह व्यक्ति : हाँ, महेन्द्र श्रीवास्तव जी के यहाँ जाने के लिए आप यहाँ सेआगे जाइए। आगे बढ़ने पर जो पहली गली आएगी वहाँ से अंदर जाने पर दूसरा घर उनका है। लेकिन उनके घर में कुछ दिनों से बहुत झगड़ा हो रहा है, आज भी हुआ था।

तनुश्री : हम एन0 जी0 ओ0 से हैं और उनके यहाँ होने वाले झगड़ों के संबंध में ही आए हैं। ठीक है सर पता बताने के लिए धन्यवाद।

दिशा का घर

सयान और तनुश्री दिशा के गेट के बाहर पहुँच चुके हैं, उन्हें घर के अंदर झगड़ने की आवाज सुनाई पड़ रही है। तनुश्री पहले गेट के बगल में दीवार पर लगा बेल (घंटी) बजाती है। घर के अंदर से जोरदार आवाज आती है, कौन है ?

तनुश्री : जरा गेट खोलिए हम संवेदना फाउंडेशन एन0 जी0 ओ0 से आए हैं।

दिशा के ससुर जी : क्या काम है ? किसे ढूँढ रहे हैं आप ?

सयान : काम बताता हूँ सर आप प्लीज गेट खोलिए। मैं आपको ही ढूँढता हुआ आया हूँ।

दिशा के ससुर जी गेट खोलते हैं।

सयान और तनुश्री : नमस्ते अंकल जी! मैं तनुश्री और ये मेरे को-वर्कर सयान है। क्या हम अंदर आकर बात कर सकते हैं ?

महेन्द्र जी (दिशा के ससुर जी) : हाँ, आइए। ऊपरी मन से कहते हुए उन्हें अंदर बुलाते हैं।

(दिशा के सास और ससुर जी, दिशा की माँ, साथ में तनुश्री और सयान सभी हॉल में कुर्सी पर बैठे हैं। दिशा अपने माँ के पीछे खड़ी है, दिशा की दोनों बेटियाँ माँ के साथ खड़ी होकर सबको निहार रही है।)

तनुश्री दिशा के सास और ससुर जी को 'नमस्ते' करते है। अपना और सयान का परिचय देती है।

तनुश्री : हम संवेदना फाउंडेशन से आए हैं, हम घरेलु हिंसा से पीड़ित महिलाओं, दहेज के लिए प्रताड़ित महिलाओं या किसी भी तरह के मुसीबत में फँसी महिलाओं की मदद करते हैं। कुछ दिन पहले हमें एक 'मैसेज' मिला

था कि आप लोगों के द्वारा आपकी बहु को प्रताड़ित किया जाता है और अभी जब हम पहुँचे तब भी हमने बाहर झगड़ने की आवाज सुनी।

महेन्द्र जी : आप लोग जैसा सोच रहे हैं, वैसा बड़ा कोई विवाद नहीं है। मामूली घरेलु विवाद है... हम आपस में सुलह कर लेंगे।

सयान : देखिए महेन्द्र जी हमने आज तक सैकड़ो घरेलु विवाद समाप्त किया है। चाहे बातों से हो या कानून की मदद से। उतना तो हमें भी आता है समझ कि विवाद मामूली है या बड़ा।

तनुश्री : दिशा तुम बताओ क्या हो रहा है तुम्हारे साथ।

दिशा : मैम! पिछले कुछ दिनों से मेरे सास और ससुर जी द्वारा हर छोटे-छोटे बातों पे मेरे से झगड़ा किया जाता है। पीछे बीते 4-5 महिने के अंदर दो बार मुझे शारीरिक रूप से भी प्रताड़ित किया जा चुका है।

दिशा की माँ : बेटी मुझे दिशा ने जब बताया कि उसकी जान को भी खतरा है तभी मैं इसके साथ यहाँ आई हूँ। लेकिन मेरे साथ भी इनके द्वारा बुरा बर्ताव किया जा रहा है। आज तो सुबह से जो झगड़ा शुरू हुआ तो आपके आने तक भी खत्म नहीं हुआ था।

तनुश्री : महेन्द्र जी बताइए, आप भी आंटी जी (सासु जी) क्या दिशा और उसकी माँ ने जो बताया वो सच है या झूठ।

दिशा की सासु माँ : ऐसा तो नहीं है कि सिर्फ हम झगड़ रहे हैं, वो भी अपने घमंड में रहती है और हमें पलट-पलट कर करवा जवाब देती है।

(दिशा अपने मोबाइल में रिकार्ड किया हुआ वीडियो तनुश्री को दिखाती है। देखिए मैम कितना हिंसा हुआ है मेंरे साथ।)

तनुश्री : देखिए महेन्द्र जी! यह वीडियो तो गलत नहीं है। आप लोगों के खिलाफ बहुत सबूत है। यदि आप चाहें तो हम मिलकर मामले को हल कर सकते हैं वरना अंत में तो कानूनी प्रक्रिया है ही।

सयान : आप भी बताइए दिशा जी आप क्या चाहते हैं ?

दिशा : मैं बस इतना चाहती हूँ कि मुझे बेटी के तरह सम्मान मिले। गलती हो, तो मुझे डाँट दें, कुछ बोल दें या समझा दें लेकिन रोज-रोज की कीच-कीच मेरे से नहीं सहा जाता है अब। और हाँ मैम यदि हमारा आपसी सहमति से सुलह हो जाए तो ज्यादा अच्छा होगा।

तनुश्री : महेन्द्र जी और आंटी जी! आप लोग भी बताइए क्या करें ?

महेन्द्र जी : आज दिशा बेटी ने अपने बड़प्पन का एहसास करा दिया, वह चाहती तो पुलिस बुलाकर हमें जेल भी भिजवा सकती थी। पर्याप्त सबूत था उसके पास। लेकिन इतनी मुश्किलों से गुजरते हुए भी इसने आप लोगों को बुलाया ताकि रिश्ता बचा रहे।

दिशा की सासु माँ कुर्सी से उठती है और दिशा को गले लगाकर रोने लगती है। शायद आज बहु के प्रति सम्मान और प्रेम उनके हृदय में जागा है। दिशा की आँखों में भी आँसू भर गई है। दिशा के ससुर जी दिशा की छोटी बेटी को गोद में लेते हैं और दिशा को सभी के लिए कॉफी बनाने को कहते हैं।

सभी काफी साथ में पीते हैं, बातें करते हैं। तनु और सयान काफी खुश हैं एक परिवार को टूटने से बचाकर।

तनुश्री : ठीक है महेन्द्र जी और आंटी जी अब हमें चलना होगा नहीं तो ट्रेन छूट जाएगी। ठीक है दिशा अपने सासु और ससुर जी का अच्छे से ख्याल रखना।

सयान दिशा की दोनों प्यारी बेटियों को थोड़ा दुलार करते हैं।

महेन्द्र जी : ठीक है बेटा जाओ... पहुँचकर फोन जरूर करना और फिर कभी पटना आना हुआ तो घर पे जरूर आना। साथ में भोजन करेंगे।

सयान : जरूर सर जरूर ! दोनों सभी को नमस्ते करते हुए स्टेशन के लिए निकल जाते हैं। ऑटो में बैठकर तनुश्री प्रीति मैम को सारी बाते बताती है। प्रीति मैम काफी खुश होती हैं। सयान और तनुश्री रेलवे स्टेशन पहुँचकर ट्रेन में बैठ चुके हैं।

(शाहदरा, पुलिस स्टेशन)

सिंह सर : यादव सर हो सकता है कि कातिल मिस्टर थॉमस या नहीं तो वे 'कपल' हो। क्या एक बार उन लोगों को थाना बुलाकर पुछताछ करना चाहिए ?

यादव सर : संभावना तो है सिंह सर। बुलाइए थाना तीनों को... एक बार पुछताछ किया जाए।

सिंह सर : खान साहब, मिस्टर थॉमस और वो जो 'कपल' बॉडी मिलने वाले दिन पार्क में थे, उनका फोन नंबर है न आपके पास।

खान साहब : जी सर है।

सिंह सर : सभी को कॉल करके जल्दी थाना आने बोलिए... कह दीजिएगा यादव सर ने मर्डर संबंधित पुछताछ के लिए बुलाया है।

खान साहब : एक-एक करके तीनों को कॉल करते हैं और जल्द से जल्द थाना पहुँचने को कहते हैं।

सीटी पार्क

जसीम सर पार्क से यादव सर को फोन पर कुछ जरूरी सूचना देते हैं।

जसीम सर : हैलो यादव सर।

यादव सर : हाँ, जसीम सर बोलिए क्या कुछ सुराग मिला।

जसीम सर : हाँ सर, सुराग तो नहीं लेकिन पार्क के एकदम पीछे की तरफ दीवार को तोड़कर रास्ता बनाया गया है। कातिल अंदर आने के लिए उस रास्ते का ही प्रयोग करते होंगे।

यादव सर : जानकारी तो ये बहुत काम की है। पीछे का रास्ता उन लोगों ने इसलिए चुना जसीम सर क्योंकि पीछे के रास्ते से दो बाइपास हैं जिस कारण पीछे के रास्ते पे उतनी ट्रेफिक नहीं रहती है।

जसीम सर : हाँ सर, वे बहुत जानकारी के साथ और चालाकी से मर्डर कर रहे हैं। लेकिन उनके रास्ते में अब हम लोग भी जाल बिछाते हैं सर।

यादव सर : हाँ अब कातिल ज्यादा दिनों तक खुद को नहीं बचा सकता है। ठीक है जसीम सर आप और अच्छे से इन्वेस्टिगेट कर लीजिए।

(मिस्टर थॉमस और वह कपल समीरा और हर्ष भी शाहदरा पुलिस स्टेशन पहुँच चुके हैं। खान साहब तीनों को यादव सर के पास ले जाते हैं।)

यादव सर : मिस्टर थॉमस कैसे हैं आप ? बुरा मत मानियेगा पुछताछ के लिए आप लोगों को बुलाना इन्वेस्टिगेशन के लिए जरूरी था... इसीलिए। हाँ, जी आप दोनों अपना परिचय दीजिए।

समीरा और हर्ष दोनों अपना-अपना नाम बताते हैं।

यादव सर : मिस्टर थॉमस कुछ सवाल करूँगा आपसे इसे सिर्फ इन्वेस्टिगेशन का पार्ट समझकर प्लीज बुरा नहीं मानियेगा क्योंकि हमें याद है आपने बहुत कॉपरेट किया था उस दिन।

मिस्टर थॉमस : श्योर (जरूर) सर, पूछिए जो भी पूछना है, मैं आज भी कॉपरेट करूँगा।

यादव सर : मिस्टर थॉमस आप दोनों दिन पार्क में मौजूद थे। क्या आपने किसी ऐसे इंसान को देखा था जिस पे आपको संदेह हुआ हो।

मिस्टर थॉमस : सर पहले दिन तो पार्क में बहुत सारे लोग थे लेकिन किसी पे शक करने जैसा कुछ नोटिस नहीं किया था।

यादव सर : ओके मिस्टर थॉमस। क्या आपने कत्ल किया है या आप कातिल के साथ कत्ल करने में शामिल हैं ?

मिस्टर थॉमस : सर अब ये आप बिल्कुल बेबुनियाद सवाल कर रहे हैं। इसका जवाब हजार बार न है सिर्फ न। बाकि सर मुझे बेकरी जाना है। क्या जा सकता हूँ मैं ?

यादव सर : मिस्टर थॉमस नाराज मत होइए। मजबूरी है हमारी भी, करना पड़ता है सवाल।

मिस्टर थॉमस : ओके सर, प्लीज मुझे इजाजत दीजिए जाने का।

यादव सर : ठीक मिस्टर थॉमस जाइए आप। लेकिन हो सकता है आपको फिर बुलाया जा सकता है।

मिस्टर थॉमस : ओके सर, आप जितनी बार बुलाएँगे, मैं आ जाऊँगा। बस बिना सबूत के मुझे आरोपी घोषित न कीजिएगा।

यादव सर : हाँ जी, आप दोनों को जब पता था पार्क में एक प्रेमी जोड़े की डेड बॉडी मिली थी तो फिर आप लोग पार्क को ही क्यों चुना मिलने के लिए, मार्केट में बहुत सारे जगह हैं। आप दोनों ने मिलकर मर्डर किया था क्या ?

हर्ष : सर, हममें इतनी हिम्मत तो नहीं कि किसी का मर्डर कर दें।

समीरा : और हाँ सर, हमने पार्क में मिलना इसलिए चुना क्योंकि अभी पार्क में लोग बहुत कम संख्या में आते हैं। दरअसल बात ये है कि सर मैं भूमिहार कास्ट की हूँ और हर्ष वाल्मिकी समाज से है। मेरी फैमिली वालों ने हर्ष को दो बार जान से मारने की धमकी दे चुके हैं। बस इसी डर से हम पार्क में

मिलते थे अभी। यदि इस बार मेरे फैमिली में से किसी ने भी हमें साथ देख लिया तो हम दोनों को मार देंगे वो।

यादव सर : ऐसी परेशानी है, तो शिकायत दर्ज करवा देनी चाहिए थी न।

समीरा : हाँ सर लेकिन अभी हम दोनों को खुद को सैटल भी करना है। इसीलिए अभी हम लोग बहुत कम मिलते हैं। जब शादी का समय आयेगा तब तो आपसे मदद जरूर लेंगे सर।

यादव सर : अब ये बताइए आप दोनों उस दिन किसी ऐसे इंसान को पार्क में देखा था जिसपे संदेह हुआ हो।

हर्ष : नहीं सर, असल में सर जब वहाँ पहुँचे तो सिर्फ दो लोग जॉगिंग कर रहे थे। शायद 'मध्यम उम्र' के पति-पत्नी थे।

यादव सर : कहीं आप दोनों कातिलों के साथ मिले तो नहीं हैं ?

समीरा : नहीं सर बिल्कुल भी नहीं। यदि आपको कोई भी सबूत हमारे खिलाफ मिल गया तो आप हमें गिरफ्तार कर लीजिएगा।

हर्ष : सर अब हमें जाने की इजाजत दे दीजिए। मुसीबत हो जाएगी हम दोनों के लिए यदि किसी ने साथ देख लिया हमें तो।

यादव सर : ठीक है जाइए। लेकिन हो सकता है फिर से बुलाया जाए आप लोगों को।

समीरा : श्योर सर, आप जब बुलाएँगे, हम आ जाएँगे।

संवेदना फाउंडेशन

(प्रीति मैम, सुनीधि, संदीप और जोया अपने-अपने सीट पे पैठी हैं। प्रीति मैम का फोन बजता है।)

प्रीति मैम : हैलो, कौन ?

एक लड़की सिसकते हुए एकदम धीमी आवाज में कहती है- हैलो मैम! मैं अंजली मुखर्जी बोल रही हूँ। मैम! मुझे बचा लीजिए वरना मेरा पति मेरी जान ले लेगा।

प्रीति मैम : आप बोल कहाँ से रही हो ?

अंजली : मैम! मैं दिल्ली, शाहदरा के 'गीता कॉलोनी' से बोल रही हूँ। मैम! पिछले एक सप्ताह से मुझे मेरे पति द्वारा बहुत प्रताड़ित किया जा रहा है। एक-दो दिन में यदि मैं यहाँ से नहीं निकली तो ये मुझे मार देगा मैम।

प्रीति मैम : आप किसी भी तरह कल तक संभालिए। हम अभी तुरंत निकल रहे हैं। कल तक पहुँच जाएँगे दिल्ली, ठीक है। आप अपना पता हमें मैसेज कर दीजिए।

प्रीति मैम : संदीप! ये लो चाबी मेरी कार बाहर कीजिए। दिल्ली के लिए तुरंत निकलना होगा। दिल्ली के शाहदरा स्थित 'गीता कॉलोनी' में एक लड़की बहुत मुसीबत में फँसी है। यदि समय से हमने उसकी मदद नहीं की तो उसकी जान भी जा सकती है।

सभी दिल्ली के लिए ऑफिस बंद करके निकल पड़ते हैं।

प्रीति मैम : हैलो, तनुश्री हम लोग सभी अर्जेंट में दिल्ली के लिए निकल गए हैं। आप लोग कहाँ पहुँचे हैं।

तनुश्री : हम लोग पंडित दीन-दयाल उपाध्याय जंक्शन पहुँचने वाले हैं।

प्रीति मैम : ऐसा कीजिए आप और सयान पं0 दीन-दयाल उपाध्याय स्टेशन से ट्रेन बदलकर दिल्ली पहुँचिए।

तनुश्री : ठीक है मैम।

सयान : क्या हुआ तनु?

तनुश्री : दिल्ली, शाहदरा का कोई बहुत अर्जेन्ट मामला है। मैम बोली हम दोनों को भी ट्रेन बदलकर दिल्ली पहुँचने।

सयान : मामला कुछ ज्यादा ही गंभीर होगा तभी मैम ने हमें ट्रेन चेंज करते हुए भी आने को बोली।

तनुश्री : हाँ मामला सीरियस तो है। अच्छा सयान मैं थोड़ा लेट रही हूँ। पं0 दीन दयाल उपाध्याय स्टेशन पे हमे उतरना है।

सयान : ठीक है आराम करो तुम।

तनुश्री : इस महीने लगता है बहुत परेशान रहने वाले है हम सभी। ऐसा कहकर तनुश्री सो जाती है। इतने सारे मामले पहले से ही हैं, उसपे ये गंभीर मामला वो भी दिल्ली शाहदरा का।

सयान : हैलो मैम, 'गुड मॉर्निंग'। कहाँ पहुँचे आप लोग ?

प्रीति मैम : गुड मॉर्निंग कल रात तो गाड़ी सही चली लेकिन अभी सुबह ट्रैफिक ज्यादा होने के कारण गाड़ी स्लो ड्राइव करना पड़ रहा है। लेकिन आज शाम जल्द ही पहुँच जाएँगे हम लोग। आप लोग कहाँ पहुँचे हैं?

सयान : हम लोग तो सूबेदारगंज पहुँचे हैं। यदि ट्रेन सही समय पे पहुँचाती है तो हम लोग दोपहर एक बजे तक पहुँच जाएँगे।

प्रीति मैम : ठीक है थोड़ा ध्यान से सफर करना है। थक गए होंगे आप दोनों। आइए दिल्ली में मिलते हैं।

शाहदरा, पुलिस स्टेशन
(रात्रि का वक्त, करीब नौ बजे)

शाहदरा पुलिस स्टेशन के टेलीफोन की घंटी बजती है और खान साहब फोन उठाते हैं।

खान साहब : हैलो, कौन बोल रहे हैं?

एक व्यक्ति : हैलो सर, मैं मनोज, विश्वास नगर, दिल्ली से बोल रहा हूँ। यहाँ मेरे पड़ोस में दीपक जी रहते हैं जिनके घर में कुछ अपराधी घुस गए हैं जो उनके घर में लूटपाट कर रहे हैं। मुझे लग रहा है सर यह उन्हीं 'अपराधियों का गिरोह' है, जो दिल्ली में लगातार हत्याओं को अंजाम दे रहा है। कृपया आप जल्दी आ जाइए सर।

खान साहब : एक मिनट सर, आप एस0 पी0 सर से बात कर लीजिए। हैलो मैं एस0 पी0 यादव बोल रहा हूँ।

वह व्यक्ति यादव सर को सब कुछ बताते हैं।

यादव सर : ठीक है हम तुरंत पहुँच रहे हैं। आप अपना फोन चालू रखिएगा।

खान साहब जल्दी गाड़ी निकालिए और सभी को बोलिए विश्वास नगर के लिए निकले तुरंत।

खान साहब तुरंत गाड़ी घुमाते हैं और सभी से सर को फॉलो करते हुए विश्वास नगर चलने को कहते हैं।

शायद आज अपराधी हमारी गिरफ्त में होगा।

यादव सर अपने पूरे दल-बल के साथ विश्वास नगर के लिए निकल पड़े हैं।

प्रीति मैम अपने सभी सदस्यों के साथ मिलकर एक और महिला के मामले को सफलतापूर्वक हल करते हुए बैंगलोर अपने हेड ऑफिस के लिए निकल चुकी हैं। उनकी गाड़ी जैसे ही विकास मार्ग पहुँचती है तभी विकास मार्ग से होकर एस0 पी0 यादव सर का काफिला सायरन बजाते हुए विश्वास नगर के लिए जा रहे होते हैं।

प्रीति मैम : लगता है कोई बड़ी वारदात हुई है, तभी इतने पुलिस वाले जा रहे है।

सुनीधि : जी मैम कुछ तो हुआ है। शायद बहुत बड़ा।

पूरी ट्रैफिक जाम हो चुकी है, सभी गाड़ियाँ रूकी हुई है। सिर्फ पुलिस बल की गाड़ियाँ आगे बढ़ रही है। इसी बीच तनुश्री एक दूसरी गाड़ी वाले से पूछती है- भैया क्या हुआ है? क्यों इतने पुलिस जा रहे है।

गाड़ी वाले भैया – मैडम दिल्ली में लगातार मर्डर हो रहा है कुछ दिनों से। शायद उन अपराधियों का ही कोई सूचना मिला है। उन्हें ही पकड़ने शायद।

संवेदना फाउंडेशन के सभी सदस्य जिस कार में बैठे हैं, वह कार ट्रैफिक थोड़ा कम होते ही 'गीता कॉलोनी' बाइपास के तरफ मुड़ चुके हैं।

ट्रैफिक को चीरता हुआ, मन में कातिलों को पकड़ने की इच्छा के साथ यादव सर की गाड़ी भी विश्वास नगर में उस घर के सामने पहुँच चुके हैं जिस घर में अपराधियों का पूरा गिरोह लूटपाट कर रहा है।

शाहदरा, विश्वास नगर

(उस घर के सामने जिस घर में अपराधियों का गिरोह है)

यादव सर सभी सिपाहियों को अपनी-अपनी पोजिशन लेकर घर को चारों ओर से घेरने का आदेश देते हैं। जब सभी सिपाही घर को चारों ओर से घेर लेते हैं, तब यादव सर गाड़ी से 'स्पीकर' निकालकर सभी अपराधियों को सचेत करते हैं।

देखो तुम सभी चारों ओर से घिर चुके हो यदि अपनी जान बचाना चाहते हो, तो सभी खुद को पुलिस के हवाले कर दो।

(घर के अंदर सभी अपराधी आपस में बात करते हैं और उस परिवार के करीब दस वर्ष के एक बच्चे को अपनी बंदूक की नोक पर लेकर घर के पीछे वाले रास्ते से लूटे हुए सामानों का बड़ा-बड़ा बैग लेकर घर से बाहर निकलते हैं।)

सभी अपराधी जब पीछे के रास्ते से बाहर निकल रहे होते हैं तब वहाँ तैनात चार सिपाही अपराधियों पर बंदूक तानकर उन्हें पुलिस के हवाले करने को कहते हैं। बच्चे को अपराधियों के बंदूक के नोक पर देख कोई भी पुलिस वाले उन पर गोली नहीं चलाते हैं।

लेकिन अचानक गोलियाँ चलने की आवाज आती है। अपराधियों द्वारा उन चारों पुलिस वालों पर गोलियों से हमला कर दिया जाता है। गोली किसी के पैरों पर लगी तो किसी के बाजुओं में।

गोली चलने की आवाज सुन यादव सर घर के पीछे की ओर दौड़ते हैं तो वे देखते है कि सभी चारों पुलिस वालों को गोली लगी हुई है और एक सफेद बड़ी कार में बैठकर सभी अपराधी भाग रहे हैं।

चारों सिपाही यादव सर से कहते हैं- सर हमें कुछ नहीं होगा। आप हमारी चिंता छोड़िए और अपराधियों को पकड़िए।

यादव सर हेड कांस्टेबल मंगल जी से कहते हैं कि तुरंत एम्बुलेंस बुलाकर चारों सिपाहियों को अस्पताल ले जाएं।

यादव सर गुस्से में चिल्लाते है- खान साहब गाड़ी स्टार्ट कीजिए।

कुछ पुलिस वाले घर के अंदर उस परिवार के चारों सदस्यों को रस्सी के बंधन से मुक्त करते हैं और यादव सर के पास लेकर आते हैं।

परिवार के सभी सदस्य रो रहे हैं। बच्चे के माता-पिता और दादा-दादी सभी सदस्य रोते-बिलखते यादव सर से कहते हैं- सर! वे कुल पाँच लोग थे। घर का सारा पैसा, जेवर सब कुछ लूट लिया उन लोगों ने। सर मुझे पैसा और जेवर की कोई चिंता नहीं है। बस आप मेरे पोते को बचाकर हमें सौंप दीजिए।

यादव सर उन्हें सांत्वना देते हुए कहते हैं आप बिल्कुल चिंता न करें, बच्चा भी आपको मिल जाएगा और पैसा-जेवर भी।

खान साहब गाड़ी स्टार्ट करके यादव सर के पास पहुँचते हैं। यादव सर की गाड़ी आगे और बाकी चार गाड़ियाँ उनके पीछे-पीछे तेजी में अपराधियों के गाड़ी के पीछे चल रहे हैं।

(यादव सर ने जसीम सर और सिंह सर को भी सभी सूचनाएँ दे दिए हैं। वे भी लोकेशन ट्रैक करते हुए यादव सर का साथ देने निकल पड़े हैं।)

बहुत लंबे समय तक पीछा करने के बाद पुलिस की गाड़ी जब अपराधियों के गाड़ी के बहुत करीब पहुँच जाती है, तब अपराधी अपनी गाड़ी उसी पार्क में टूटे हुए दीवार के रास्ते से अंदर घुसा देते हैं जिस पार्क में चार डेड बॉडी मिल चुकी है।

यादव सर भी पार्क के अंदर पहुँचते हैं। अपराधियों की गाड़ी पास लगी हुई देख सभी पुलिस वाले उनको ढूँढना शुरू कर देते हैं। तभी कुछ देर बाद बच्चे के रोने की आवाज सुनाई पड़ती है। बच्चे की आवाज सुनकर यादव सर रूक जाते हैं और इशारे से सभी पुलिस वालों को भी बुला लेते हैं।

यादव सर : देखो, तुम सभी अपनी जान बचाना चाहते हो, तो सभी खुद को पुलिस के हवाले कर दो। और हाँ बच्चे को कुछ भी न हो, इसका ध्यान रहे।

(सभी अपराधी पार्क के अंदर जिस झाड़ी के पीछे छिपे हैं, वहाँ वे आपस में बात कर रहे हैं। बहुत ज्यादा संख्या में पुलिस वाले हैं और भी पुलिस वालों को सूचना दे दी दिया गया होगा।)

यादव सर : तुम सब बच नहीं पाओगे इसलिए किसी भी तरह की चालाकी या बदमाशी करने से पहले अच्छे से विचार कर लो और खुद को पुलिस के हवाले कर दो जान की सलामती चाहते हो तो।

परिस्थिति की गंभीरता को देखते हुए सभी अपराधी खुद को पुलिस के हवाले कर देते हैं।

(बच्चा रोता हुआ खान साहब के पास आ जाता है। बेटा हम पुलिस वाले हैं। तुम्हें हम तुम्हारे मा-पापा और दादा-दादी के पास पहुँचा देंगे।

यादव सर : बैग सब किधर फेंका है। इस बार कत्ल नहीं कर पाए तुम लोग न।

एक अपराधी : सर हम लोग सिर्फ लूटपाट करते हैं, मर्डर नहीं। हम लोगों का यही टारगेट रहता है कि एक बार में एक ही जगह के दो बडे घरों में लूटपाट करना फिर दो-तीन महीना शांत रहना।

यादव सर : एक बार में दो घरों को लूटना और एक साथ दो लोगों का मर्डर करना। यही है तुम लोगों का अपराध को अंजाम देने का तरीका... है न?

दूसरा अपराधी : सर हम लूटपाट करते हैं, यह अपराध है हमारा लेकिन आज तक हमने एक भी कत्ल नहीं किया है।

यादव सर : बैग किधर है ?

तीसरा अपराधी : सर बैग उस आगे वाली झाड़ी के अंदर फेंक दिया था हमने।

यादव सर : मंगल जी, आप जाइए इन लोगों के साथ और बैग सारा उठवाकर ले आइए।

(खान साहब आप जाइए बच्चे को माता-पिता को सौंप कर आइए।)

एक के बाद एक करीब दस छोटे-बड़े बैग लेकर आते हैं।

यादव सर : खोलो बैग को।

(जसीम सर और सिंह सर भी दल-बल के साथ पार्क में पहुँच चुके हैं।)

प्रत्येक बैग में पैसा और जेवर भरा हुआ है। एक बड़ा बैग सिर्फ पैसों से भरा है।

जसीम सर : एक जगह इतनी लूट-पाट की है... और भी बैग है।

चौथा अपराधी : नहीं सर ये हमने दो घरों में लूटा है। नहीं सर और बैग नहीं है।

यादव सर : जसीम सर जहाँ झाड़ी के अंदर इन लोगों ने बैग फेका था, एक बार आप उस स्थान को खुद जाँचिए। चार-चार मर्डर करने के बाद इनका कहना है कि इन लोगों ने एक भी मर्डर नहीं किया है।

जसीम सर जब इन्वेस्टिगेट कर रहे होते हैं तभी उनकी नजर एक छोटी और एक बड़ी दो बैगों पर पड़ती है।

जसीम सर तुरंत कॉल करके यादव सर को दोनों बैग के बारे में बतलाते हैं।

यादव सर चार-पाँच सिपाहियों को लेकर जसीम सर के पास पहुँचते हैं। यादव सर साथ आए सिपाहियों को बैग लाने को कहते हैं। जैसे ही सिपाही बैग के करीब पहुँचते हैं, उन्हें पहले की तरह बैग के दोनों कोनों में से दो हाथ दिखलाई पड़ता है। सिपाही घबराहट भरी आवाज में यादव सर से कहते हैं- सर बैग में पहले की तरह दोनों कोनों में हाथ दिख रहा है।

(दोनों बैग को उठवाकर ऊपर लाकर खोला जाता है। एक छोटे वाले बैग में जेवर था, तो दूसरे बड़े वाले बैग में फिर एक साथ दो डेड बॉडी।)

यादव सर गुस्से में लाल होकर एक अपराधी को दो थप्पड़ जड़ते हुए कहते हैं- तो तुम लोग सिर्फ लूट-पाट करते हो, कत्ल नहीं, तो फिर ये क्या है ?

अपराधी : सर, ये बैग हमारा नहीं है। हम नहीं जानते हैं यह बैग किसने रखा यहाँ।

जसीम सर उस अपराधी का कॉलर पकड़ते हुए कहते हैं- रंगे हाथों पकड़ा गया है, फिर भी जुल्म कबूल नहीं किया जा रहा है तुम लोगों से।

अपराधी : सर, सच कह रहे हैं, हमने कत्ल नहीं किया है। यह बैग हमारा नहीं है।

यादव सर : सच कह रहे हो तुम लोग। बैग मिला, बैग मैं दो डेड बॉडी मिली लेकिन तुम लोगों ने मर्डर नहीं किया है न।

गुस्से में यादव सर कॉलर पकड़ते हुए कहते हैं- बताओ सभी “छः मर्डर” तुम लोगों ने ही किया है न। क्यों मारो उन बेगुनाहों को, बताओ।

सभी अपराधी बिल्कुल डरे-सहमे हुए हैं। एक अपराधी किसी तरह हिम्मत जुटा कर फिर कहता है- सर हमने कोई भी कत्ल नहीं किया है।

सिंह सर : यादव सर ये लोग ऐसे कबूल करने वाले नहीं हैं। आज यहीं पार्क में इनकी कस्टडी लगाते हैं। जब थर्ड-डिग्री टॉर्चर होगा तब सारा सच बाहर आएगा।

(सभी अपराधियों को बहुत ज्यादा टार्चर करने के बावजूद भी वे मर्डर की बात स्वीकार नहीं करते हैं। सभी अपराधी बेहोशी की हालत में पहुँच चुके हैं।)

जसीम सर : सिंह सर शायद इन लोगों ने मर्डर नहीं किया है, वरना इतने में स्वीकार कर लेता।

सिंह सर और यादव सर : हाँ, समझ नहीं आ रहा है।

जसीम सर : आ जायेगा सर समझ में क्यों इससे पहले जब मैं क्राइम सीन को दुबारा इन्वेस्टिगेट करने आया था दो दिनों पहले तब मैंने सीक्रेटली पार्क के अंदर सी0सी0टी0वी0 कैमरा लगा दिया था।

यादव सर : ये तो बहुत जबरदस्त काम किया आपने। सी0सी0टी0वी0 फुटेज देखने के बाद सब साफ हो जाएगा।

जसीम सर अपने लैपटॉप में सी0सी0टी0वी0 फुटेज चैक करते हैं।

जसीम सर : यादव सर ये लोग सच बोल रहे हैं। इन लोगों से पहले एक गाड़ी पार्क में घुसी थी, उस गाड़ी से ही डेड-बॉडी वाले बैग को फेंका गया है।

यादव सर : जसीम सर एक बार 'पाउस' करके गाड़ी का नंबर दिखाइगा।

जसीम सर द्वारा जैसे ही वीडियो पाउस करके गाड़ी का नंबर यादव सर को दिखाया जाता है तभी सिंह सर को कुछ याद आ जाता है।

सिंह सर : यादव सर जब मैं यहाँ आ रहा था तभी गीता कॉलोनी बाइपास के पास मेरी एक लड़की से बहस हुई थी। वह यही कार था, जिसमें वह बैठी थी। मुझे गाड़ी का नंबर ध्यान में आ रहा है।

यादव सर : सिंह सर तुंरत सभी थाना में कॉल करके सभी मुख्य रास्ते को बंद करने का आदेश दीजिए। गाड़ी का फोटो और नंबर फोरवार्ड करके बोलिये कि जहाँ भी यह गाड़ी दिखे, उसे पकड़कर हमें सूचना दें।

जसीम सर : सर अभी वो लोग ज्यादा दूर नहीं निकले होंगे। इन लोगों को और जब्त सामानों को थाना भिजवा दीजिए और चलिए हम लोग भी उसी गाड़ी का पता करते हैं।

सिंह सर सभी मुख्य चेक-पोस्ट में गाड़ी का फोटो और नम्बर भेजकर अलर्ट रहने को कहते हैं। जसीम सर यादव सर और सिंह सर सभी गाड़ी को तलाश करने निकल पड़े हैं।

सिंह सर का फोन बजता है।

गाजीपुर बार्डर चेकपोस्ट से- हैलो सर, मैं S.I. शुक्ला गाजीपुर बोर्डर चेकपोस्ट से बोल रहा हूँ। आपने जो गाड़ी का फोटो और नंबर भेजा था, उसी नंबर के गाड़ी को हमने पकड़ा है। लेकिन ये नहीं मान रहे हैं, कह रहे हैं कि आप लोगों को कोई गलतफहमी हुई है।

सिंह सर : शुक्ला जी उनको फोन दीजिए और बोलिए कि एस0पी0 सर बात करेंगे। सिंह सर यादव सर को फोन देते हैं।

यादव सर : हैलो मैं शाहदरा टाउन एस0पी0 यशस्वी यादव बोल रहा हूँ। आप गाजीपुर चेक पोस्ट में ठहरिए हम 20-25 मिनट में आपके पास पहुँच रहे हैं।

कार में सवार एक महिला शुक्ला जी को फोन दे देती है और यादव सर के आने का इंतजार करती है। अब रूकने के अलावा उनके पास दूसरा कोई

उपाय था भी नहीं। एस0 पी0 सर का नाम सुनते ही कार में सवार सभी लोगों के चेहरे पर एक डर का साया छा जाता है।

यादव सर, जसीम सर और सिंह सर 'गाजीपुर बार्डर चेकपोस्ट' पहुँचकर गाड़ी और गाड़ी का नंबर देखते हैं तो वह बिल्कुल वही गाड़ी होती है, जो सी0सी0टी0वी0 कैमरा के वीडियो और फुटेज में था।

कार में सवार सभी लोगों को कार के साथ शाहदरा पुलिस स्टेशन लाकर पूछताछ किया जाता है।

यादव सर : सी0सी0टी0वी0 में गाड़ी और गाड़ी से बैग निकालकर फेंकते हुए तुम लोगों का वीडियो साफ-साफ रिकॉर्ड हो चुका है। इसीलिए बिना समय बर्बाद किए और बिना हड्डी तुड़वाये सच क्या है बता दीजिए। तुम्हें पकड़ने के लिए इस बार हमने पूरे पार्क में सीक्रेट कैमरा लगा दिया था।

मिस प्रीति : हाँ, सर सभी छः मर्डर हम लोगों ने ही किया है।

जसीम सर : वो हमें पता है, ये बताओ क्यों मारा उन लोगों को और कैसे ?

सिंह सर : एकदम शुरूआत से बताओ। सबसे पहले बैग में एक यंग लड़का और एक यंग लड़की मिली थी। उन दोनों को क्यों मारा ?

सयान : सर जो लड़की मिली थी वो मेरी गर्लफ्रेंड थी।

तनुश्री : और जो लड़का मिला था वो मेरा बॉयफ्रेंड।

सिंह सर : लाजवाब, तुमने अपनी गर्लफ्रेंड को मारा (सयान की तरफ इशारा करते हुए) और तुमने अपने बॉयफ्रेंड को (तनुश्री की तरफ इशारा करते हुए), फिर दोनों को एक बैग में एक साथ फेंक दिया। ताकि हमें लगे ये दोनों एक-दूसरे के 'लवर्स' हैं। चलो अब आगे बताओ।

सयान : सर मैं और मेरी प्रेमिका शहनाज दोनों दो साल से रिलेशनशिप में थे। दिल्ली मुखर्जी नगर में जहाँ मैं अपना 'साइबर कैफे' चलाता हूँ, उस रास्ते से ही वो अपने क्लास जाती थी। कभी-कभी जेरॉक्स करवाने तो कभी कुछ ऑनलाइन फार्म वगैरह अप्लाई करवाने वो मेरे कैफे आया करती थी। इस तरह हम लोगों का एक-दूसरे से जान पहचान हुआ, फिर नंबर एक्सचेंज

और एक दिन मैंने उसे प्रपोज किया। लगभग पंद्रह दिनों के बाद उसने मेरा प्रेम प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। फिर रोज बातें होने लगी।

सर मैं उसके प्यार में कुछ ऐसे खो चुका था कि उससे बात किए बगैर मैं रह नहीं पाता था।

(व्हाट्सएप पे मैसेज में बात करते हुए।)

सयान : हाई, जगी हो क्या ? मुझे नींद नहीं आ रहा है।

शहनाज : हाँ सयान। मैं तो जगी हुई हुँ, तुम्हारे मैसेज का ही इंतजार कर रही थी।

सयान : इंतजार कर रही थी लेकिन एक मैसेज नहीं किया गया तुमसे।

शहनाज : तुम्हारे साथ बिताए गए पलों की यादों से निकलने का फुर्सत मिले तब न। मैं हर वक्त बस यही सोचती रहती हूँ कि तुम कितने खास हो मेरे लिए।

सयान : अरे वाह ! लगता है आज 'मेरा चाँद' कुछ ज्यादा ही रोमांटिक मूड में है। सच कहूँ तो मेरे दिन का सबसे बेहतरीन हिस्सा तुमसे बात करना ही होता है।

शहनाज : सच ! तुम हमेशा मुझे स्पेशल फील कराते हो। अच्छा अब मुझे सोना है, वरना सुबह ऑफिस के लिए लेट हो जाऊँगी।

सयान : गुड नाईट। लेकिन सपनों में मुझसे ही मिलना। अपना ख्याल रखना।

शेहनाज : पक्का ! लव यू। बाय।

ऐसे ही रोज हम दोनों सोने से पहले बातें किया करते थे। शहनाज सिर्फ चाहत नहीं, मेरी आदत बन गई थी। साथ-घूमना, मिलना कुछ ऐसा हो गया था जैसे मैं उसके बिना रह ही नहीं सकता हूँ।

फिर एक दिन मेरे जीवन का सबसे 'अनलकी' रात आता है। करीब एक बजे रात में मुझे शहनाज का मैसेज आया।

शहनाज : सयान! क्या तुम जगे हो ? मुझे तुमसे कुछ जरूरी बातें करनी हैं।

सयान : हाँ शहनाज, मैं जगा हूँ। तुमसे बात किए बगैर मुझे नींद कैसे आ सकती है ? इतनी बार तुम्हें कॉल किया, मैसेज किया लेकिन तुम्हारा कोई रिप्लाई नहीं आया। इतनी रात को मैसेज कर रही है, सब ठीक तो है न!

शहनाज : सयान, सब कुछ खत्म हो गया... मैं बहुत रो रही हूँ। मुझे समझ नहीं आ रहा है मैं क्या करूँ।

सयान : अरे, खुद को शांत करो। मुझे डराओ मत। साफ-साफ बताओ क्या बात है ?

शहनाज : मेरे घरवालों ने मेरी सगाई कहीं और पक्की कर दी है। अगले हफ्ते मेरी एंगेजमेंट का डेट रख दिया है।

सयान : क्या ? यह तुम क्या बात कर रही हो शहनाज ? क्या तुम मेरे बगैर रह पाओगी।

शहनाज : हाँ रह पाऊँगी जिंदा लाश बनकर। मैं तुम्हारी जगह किसी और को सोचती भी हूँ तो मैं काँपने लगती हूँ। ऐसा लगता है, जैसे मेरे में कुछ है ही नहीं। लेकिन मैं मजबूर हूँ।

सयान : तुम मेरी जिंदगी हो शहनाज। मैं तुम्हारे बिना जीने की सोच भी नहीं सकता। चलो हम शादी कर लेते हैं।

शहनाज : मुझे माफ कर देना सयान मैं अंदर से पूरी तरह टूट चुकी हूँ।

सयान : यह तुम्हारी कमजोरी है शहनाज ! तुम समाज से, परिवार से लड़ना नहीं चाहती; तुम सही फैसला नहीं ले पा रही हो। पूरा जीवन तुम्हें घुटन होगा। तुम समझ रही हो मेरी बातों को। मैं किसी और को तुम्हें छूना तो दूर, देखने भी नहीं दूँगा।

शहनाज : (कोई जवाब नहीं .... सिर्फ सीन)

फिर वह मनहूस दिन भी आता है जब शहनाज की सगाई, फिर शादी भी हो जाती है। शहनाज ने मुझे सभी जगह से 'ब्लॉक' कर दिया था। मैं उसके बारे कुछ भी जान नहीं पा रहा था।

फिर एक दिन शहनाज के बारे में पता करने मैं उसके सबसे खास दोस्त 'अनम' के पास गया। अनम ने मुझे बताया कि शहनाज की शादी को दो महीने हो चुके हैं लेकिन उसने अपने शौहर को खुद को छूने तक नहीं दी है। उसके शौहर को उसके 'पास्ट' का पता चल गया है जिस कारण वह अब उसके साथ मार-पीट करता है। वह कह रही थी कि वह सुसाइड कर लेगी।

सयान : (रोते हुए) मैंने उसे समझाया था पूरा जीवन घुटोगी। चलो मेरे साथ लेकिन वह नहीं मानी। इधर मैं भी मर रहा हूँ। मैंने आज तक शराब नहीं पी थी। लेकिन अब बिना शराब पिए रात ही नहीं कटती।

अनम : हाँ, वो भी मुझे अक्सर बोलती है कि काश उस दिन मैं सयान को समझ पाती।

सयान : क्या तुम उसे कहकर एक बार मेरे से मिलवा सकती हो।

अनम : हाँ, क्यों नहीं ? हो जाएगा।

अनम शहनाज को लेकर आती है। शहनाज ने उसके साथ क्या-क्या हो रहा है, मुझे सारी बात बतायी। तब मुझे समझ आया कि वह जैसी जिंदगी जी रही है, उससे अच्छा तो मौत है। अनम कुछ देर में चली जाती है। हम दोनों भी अपना पसंदीदा जूस पीते हुए वहाँ से निकल जाते हैं लेकिन मैंने उसके जूस में केमिकल X-5 मिला दिया था जिसे पीने के कुछ देर बाद उसकी साँसे थम गई और वह रोज-रोज मिलने वाली घुटन की मृत्यु से मुक्त हो गई।

सर आप मुझे फांसी की सजा ही दिलवाइएगा प्लीज। मुझे आज तक इसका अफसोस है।

यादव सर : सजा तो तुम्हें मिलनी ही है। क्या सजा मिलेगी ये कोर्ट तय कर देगा। लेकिन मेरी सहानुभूति है तुम्हारे साथ। शहनाज को थोड़ा बगावत कर लेना चाहिए था। तुम दोनों साथ होते तो दोनों का जिंदगी खुशहाली से बीतता। एक्चुअली मेरी पत्नी और मैं दोनों पूरे परिवार के खिलाफ जाकर शादी किया था। वह 'क्रिश्चियन' थी और मैं हिंदू, इसलिए दोनों के परिवार शादी के खिलाफ थे। अच्छा अब ये बताओ और उस लड़के को किसने मारा और क्यों ?

तनुश्री : सर वह मेरा बॉयफ्रेंड अभिनव था। हम दोनों की दोस्ती इंस्टाग्राम से हुई थी। ‘स्टर्टिंग’ में पाँच छः महीने हम दोनों एक-दूसरे के साथ पार्क, रेस्टोरेंट में मिला करते थे। एक दिन अभिनव ने कॉल करके मुझे ‘होटल वेन्सन विल्ला’ मिलने बुलाया। मैं तो मना कर रही थी फिर उसके जिद्द करने पे मैंने ‘हाँ’ कर दिया। उस दिन मैं दिल्ली आई हुई थी प्रोजेक्ट के सिलसिले में दो-दिनों के लिए।

(होटल वेन्सन विल्ला का कमरा नं0- 302, शाम 05 बजे)

कमरा नं0- 302 के अंदर अभिनव सोफे पर बैठकर मुस्कुराते हुए अपने फोन में कुछ देख रहा है। बाहर से गेट खटखटाने की आवाज सुनाई पड़ती है। अभिनव गेट खोलता है। तनुश्री को देखकर वह बहुत खुश होता है। तनुश्री खुद को थोड़ा असहज महसूस कर रही है।

अभिनव : क्यों घबरा रही हो तनु ? आओ इधर बैठो।

तनु : (मन में घबराते हुए) नहीं घबराने की बात नहीं है, बस पहली बार ऐसे घर से दूर किसी से मिलने, वो भी होटल के कमरे में आई हूँ न इसीलिए।

अभिनव : अच्छा बाबा। आओ बैठो (उसे पकड़ते हुए)। कुछ समय साथ में बिताएँगे, फिर चले जाएँगे। मैं एक घंटा से तुम्हारा इंतजार कर रहा हूँ। इतना कहकर अभिनव प्यार जताते हुए तनु को गले लगाना चाहता है। तभी तनु की नजर कमरे के कोने में लगी एक चमकती हुई छोटी वस्तु पर पड़ती है।

तनुश्री : (अपने मन में खुद से बात करती हुई) ये क्या चमक रहा है। कहीं कैमरा तो नहीं लगा है। अभिनव एक घंटा पहले से है, कहीं कैमरा उसने ही तो नहीं लगाया न या ऐसा भी हो सकता है कि ये होटल वालों की करतूत हो। मुझे नीचे जाकर पता करना होगा।

अभिनव : कहाँ खो गई हो। क्या हो गया ?

तनुश्री : (अभिनव की तरफ मुड़कर, नकली मुस्कान के साथ) अभिनव मैं अपने कुछ कागजात रूम नंबर पूछते समय रिसेप्शन काउंटर पर भूल आई हूँ। मैं बस दो मिनट में लेकर आती हूँ।

अभिनव : अरे, मैं लेकर आता हूँ। तुम बैठो।

तनुश्री : (जल्दी से) नहीं-नहीं, तुम आराम करो। मुझे पता है मैंने कहाँ रखा है। मैं खुद ले आती हूँ तुरंत।

(होटल का रिसेप्शन काउंटर)

(तनु तेजी से उतरकर काउंटर पर आती है। रिसेप्शनिस्ट कंप्यूटर पर काम कर रहा है।)

तनु : (धीमी और गंभीर आवाज में) सुनिए, ऊपर कमरा नंबर 302 में .... मुझे लगता है वहाँ 'हिडन कैमरा' लगा है।

रिसेप्शनिस्ट : (हैरान होकर) क्या ? मैडम आप क्या कह रही हैं ? हमारे यहाँ फैमिलीज और प्रतिष्ठित लोग भी आते हैं।

तनु : तो क्या ? मैं आपसे झूठ बोल रही हूँ। मैंने खुद अपनी आँखों से लेंस की चमक देखी है।

रिसेप्शनिस्ट : ठीक है मैडम, आप शांत रहिए। हमारे होटल की बदनामी हो जाएगी। मैं सर से जाकर कहता हूँ कि मैडम का सिर चकरा रहा है आप थोड़ा जाकर मैडम को देख लें। और उसी बहाने मैं चेक कर लेता हूँ।

(रिसेप्शनिस्ट ऊपर कमरे से नीचे वापस आता है। उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ है।)

रिसेप्शनिस्ट : मैडम! आप सही कह रही थी। रूम के कोने में एक छोटा वायरलेस कैमरा लगा हुआ है। लेकिन मैं सच कह रहा हूँ ये हमारे होटल का नहीं है।

तनुश्री : तो फिर किसने लगाया, कैमरा ?

रिसेप्शनिस्ट : मैडम बुरा नहीं मानिएगा। सर आपके आने के दो घंटे पहले से हैं। यह कैमरा हो सकता है उन्होंने ही छुपाया हो। मैं अभी पुलिस को फोन करता हूँ।

तनु : नहीं ! पुलिस को मत बुलाओ। अगर पुलिस आ गई तो मेरी भी बदनामी होगी। मैं जैसे समझाती हूँ तुम बस वैसा ही करना, सच अभी पता चल

जाएगा। वो जैसे ही मुझे देखने नीचे आएगा मैं ज्यादा तबियत खराब होने का नाटक करूँगी। इतना ज्यादा कि रूम खाली करना पड़े। मौका देखकर तुम उसे कहना कि सर बाहर जाकर मेडिकल से कुछ दवाइयाँ ले आइए। जैसे वह दवाई लाने जाएगा एक बार हम जाकर रूम चेक करेंगे यदि कैमरा नहीं रहा तो कन्फर्म हो जाएगा।

रिसेप्शनिस्ट : ओके मैडम।

अभिनव : क्या हो गया तनु ?

तनु : अभिनव मेरा सिर घूम रहा है। अभी गिरते-गिरते बची हूँ मैं। चलो अभिनव यहाँ से चलते हैं, फिर कभी मिलेंगे।

रिसेप्शनिस्ट : सर आप रूम छोड़ दीजिए... मैं आपको आधी पेमेंट वापस कर देता हूँ। और आप मैडम को जल्दी डाक्टर दिखा दीजिए।

अभिनव : हाँ ठीक है। मैं एक बार रूम चेक करके आता हूँ, कुछ छूटा तो नहीं। तुम यही बैठो तनु। अभिनव रूम से जाकर नीचे आता है। तभी तनुश्री तबियत ज्यादा खराब होने का नाटक करती है।

रिसेप्शनिस्ट : सर आप पहले बाहर के मेडिकल से एक-दो खुराक दवा ले आइए। मैडम थोडा 'नार्मल' हो जाएगी... फिर अच्छे डॉक्टर को ले जाकर दिखा दीजिए।

अभिनव दवाई लाने बाहर निकलता है। तनु जल्दी में रिसेप्शनिस्ट के साथ जाकर रूम चेक करती है तो कैमरा वहाँ दिखाई नहीं पड़ता है।

तनु : उस दिन मुझे उसके नीयत पे 'डाउट' हो गया था सर। सच्चाई पता करने के लिए कुछ दिनों बाद मैं उसे मिलने बैंगलोर बुलाई।

'होटल वेल्लारा' इस बार दो घंटा पहले रूम पहुँचकर मैंने सब तैयारी कर रखी थी।

(होटल वेल्लारा, रिसेप्शन)

अभिनव : (रिसेप्शनिस्ट से) सर रूम नंबर 302 किधर है।

रिस्प्शनिस्ट अभिनव से रेजिस्टर में सिग्नेचर करवाकर उसे रूम नंबर 302 का रास्ता बता देते हैं।

तनु : (बेल बजने की आवाज सुनकर) दरवाजा खोलते हुए, कब से तुम्हारा इंतजार कर रही हूँ। तनु दरवाजा लॉक कर देती है।

अभिनव : दो दिनों से ट्रेन में सफर कर पहुँचा हुँ तुम्हारे पास। बिल्कुल थक गया हूँ।

तनु : हाँ, उस दिन सब मेरी वजह से अधूरा रह गया था। आओ पहले गले लग जाओ। ऐसा कहकर तनु अपनी बांहे फैला देती है। अभिनव थोड़ा मुस्कुराता है और फिर तनु को कसकर अपनी बांहों में भर लेता है। दोनों अपनी आँखें बंद कर लेते हैं।

तनु एक ग्लास में 'थम्स अप' डालती है और अभिनव से कहती है- ये लो तुम्हारा पसंदीदा 'थम्स अप', मैं 'माजा' पीती हूँ। 'थम्स अप' पीते ही अभिनव कुछ सेकेंड में बेहोश हो जाता है। अब आराम से तनु अभिनव का मोबाइल चेक करती है। गैलरी में उसे बहुत सी लड़कियों के साथ अभिनव की आपत्तिजनक 'फोटो' और वीडियो दिखता है। जब वह गैलरी को थोड़ा और स्क्रोल करती है, तो वह एक वीडियो और कुछ फोटो देखकर हैरान हो जाती है।

वह लड़की कोई और नहीं तनु की बड़ी बहन (अनु) होती है।

तनु : सर जब मैंने उसके गैलरी में मेरी बहन का फोटो और वीडियो देखी तभी मैंने उसे मारने का फैसला कर लिया। और अपने योजना के तहत सब कुछ जानने के बाद मैं घबराहट के साथ नीचे रिसेप्शन पर गयी।

रिसेप्शनिस्ट : क्या हुआ मैडम ? आप इतनी डरी हुई क्यों हैं ?

तनु : सर वो अभिनव पता नहीं अचानक बेहोश होकर गिर पड़ा। मैंने एम्बुलेंस को कॉल कर दिया है। आप किसी को मेरे साथ भेजे।

(दस मिनट में एम्बुलेंस होटल वेल्लारा पहुँचा जाता है। एम्बुलेंस अभिनव को लेकर हॉस्पिटल नहीं बल्कि एक लंबे सफर के लिए दिल्ली के लिए रवाना हो जाता है।)

सर! रास्ते में मैंने उसे पानी के साथ 'केमिकल X-5' मिला दिया था जिसे पीने के बाद वो जिंदगी से 'ब्लॉक' हो गया। उसी एम्बुलेंस में शहनाज की भी 'डेड बॉडी' थी। फिर हम लोगों ने दोनों बॉडी को उस बैग में भरकर पार्क में घना जंगल देखकर फेंक दिया।

जसीम सर : उस एम्बुलेंस में पहले से शहनाज की बॉडी थी, फिर वही एम्बुलेंस अभिनव के बॉडी को भी लेने आई। ये क्या माजरा था।

तनु : सर, हमारा 'संवेदना फाउंडेशन' नाम से बैंगलोर में एक एन0जी0ओ0 चलता है जहाँ हम बेबस, लाचार और पीड़ित लड़कियों की मदद करते हैं। वो एम्बुलेंस हमारे एन0जी0ओ0 का ही था।

सिंह सर : एन0जी0ओ0 का सहारा लेकर लोगों का मर्डर करते हैं आप लोग... लोगों की मदद तो बस मुखौटा है।

सयान : नहीं सर, एन0जी0ओ0 बस हमारा इकट्ठा होकर योजना बनाने का एक स्थान था। वो कोई और भी जगह हो सकता था। एन0जी0ओ0 के काम को हमने पूरी इमानदारी से किया है। सैकड़ो रिश्ते और घरों को हमने टूटने से बचाया है।

यादव सर : तनु! मैं तुम्हें दो सलाह देना चाहूँगा जिससे औरों का भी भला हो जाए।

पहला तो ये कि जब तक किसी को सामने से नहीं जान जाओ उससे एक-दो मुलाकात और 'फेस टू फेस' कुछ बात न कर लो तब तक बात आगे न बढ़ाओ। तुमने बस 'इंस्टाग्राम' पे लड़के को जाना और उसका प्रपोजल स्वीकार कर लिया जबकि वह लड़का तुम्हारे बारे में सब कुछ जान रहा था।

उसने सारा काम योजना बनाकर किया। उसे यह भी पता था कि तुम अनु की बहन हो।

दूसरा जब भी कोई लड़का तुमसे सच्चा प्रेम करेगा न तो वो सबसे पहले तुम्हें अपने घर ले जाएगा अपने 'फेमिली मेम्बर्स' से मिलवाएगा न कि पहली बार में ही होटल बुलाएगा।

मैं अपनी वाइफ को सबसे पहले अपने घर लेकर गया था, मेरी बड़ी भाभी से मिलवाया, उनके हाथों का नाश्ता करवाया। अक्सर मैं उसे बड़ी भाभी से मिलवाता था। मेरी माँ तो नहीं थी लेकिन मेरी बड़ी भाभी ने कभी मुझे माँ की कमी महसूस होने नहीं दी। लेकिन मेरे दूसरे भैया को जब यह पता चला तो उन्होंने 'इवा' को घर लाने से मना कर दिया क्योंकि इवा 'क्रिश्चियन' थी। मेरे घर वालों को यह पसंद नहीं था।

फिर क्या था जगह बदल-बदल कर हम मिलने लगे और लव-लाइफ की खूबसुरती का लुत्फ उठाने लगे। इसीलिए सोशल मीडिया पर किसी से दोस्ती और प्यार सोच-समझकर करनी चाहिए।

जसीम सर : पहले जो दो मर्डर हुआ वो दो 'यंग' लोगों का था। फिर दूसरे बैग में एक तो यंग लड़की थी मतलब तुम्हारी लवर (संदीप की ओर इशारा करते हुए) लेकिन दूसरा जो 50-55 का था उसे क्यों मारा ?

मिस प्रीति (संवेदना फाउंडेशन की संस्थापक) : सर! उनको मैं मारी थी।

जसीम सर : लेकिन उनसे तुम्हारा क्या संबंध था।

मिस प्रीति : यह कहानी शुरू होती है। उस दिन से जब मैं अपने 'ग्रेजुएशन' क्लास के पहले दिन कॉलेज गई थी।

(कॉलेज का सीन)

(हरा भरा कॉलेज कैंपस पर्यावरण की क्लास)

मैं 'एनवायरमेंटल साईंस' में ग्रेजुएशन क्लास का पहला लेक्चर क्लास 'अटेंड' करने गई थी। वहाँ प्रोफेसर प्रदीप लेक्चर दे रहे थे। प्रकृति को बचाने और पौधों के जीवन संबंधित विषयों पर उन्होंने बहुत ही खुबसूरती से अपनी बात प्रकट की। क्योंकि मुझे भी प्रकृति से बहुत प्यार है, लगाव है इसीलिए मैं

पहले दिन ही उनसे 'इंप्रेस' हो गई। फिर उनके हर क्लास के बाद सवाल पूछने के बहाने में उनके पास जाने लगी। हम दोनों के बीच पर्यावरण के साथ-साथ, जाति, धर्म, ऊँच-नीच, बेरोजगारी, युवाओं की आजादी, लड़कियों को बराबरी का अधिकार जैसे गहरी सामाजिक मुद्दो पर भी गहरा तालमेल था।

इसीलिए हम दोनों को एक-दूसरे से प्रेम का इकरार करने में ज्यादा समय नहीं लगा।

फिर एक दिन हमारे रिश्ते के बारे में उनके पिता को पता चल जाता है। वे शहर के एक अमीर और रसूखदार व्यक्ति थे। पहले तो उन्होंने प्रदीप को बहुत डांटा और मेरे से रिश्ता तोड़ देने को कहा। अब प्रदीप परेशान रहने लगा था अपने पापा के मना करने के कारण।

मैंने लेक्चर क्लास मिस करके एक दिन प्रदीप के पापा से बात करने उनके घर गई। लेकिन उनके पापा ने न सिर्फ मना किया बल्कि मुझे छोटी जाति का बताकर मेरी बेइज्जती भी की। मुझे यह बात बहुत गहरा सदमा दिया कि उनके न मानने की मुख्य वजह जातिवाद था।

फिर मैंने उनका पीछा करना शुरू किया और एक दिन मौका मिला। उसी दिन मैंने उनका जीवन लीला समाप्त किया। प्रदीप को लगा कि मैं शहर छोड़कर चली गई हूँ इसीलिए मैंने उसे ब्लॉक कर दिया। मुझे भेदभाव करने वाले लोग जरा भी पसंद नहीं हैं सर।

सिंह सर यादव सर और जसीम सर से कहते है- आज भी सर प्रेम छोटा हो जाता है और जाति-धर्म बड़ा। जबकि सच्चे प्रेम से ऊंचा स्थान किसी का नहीं हो सकता।

यादव सर : बाकि आप लोगों ने जुर्म किया तो सजा तो मिलेगी। रात बहुत हो गई है जाओ आप लोग जेल के अंदर आराम कर लो। बाकि तुम तीनों की दास्तां कल सुनेंगे... अब हमें भी थोड़ा आराम करना है।